

शब्दावली

क्र.सं.	शब्द	विवरण
1.	बिड-आस्क स्प्रेड	प्रस्तावित कीमत एवं बोली की कीमत के बीच अंतर
2.	सरकारी प्रतिभूतियों को वापस खरीदना	सरकारी प्रतिभूतियों को वापस खरीदना वह प्रक्रिया है जिससे भारत सरकार अपनी मौजूदा प्रतिभूतियों को धारकों वापस से खरीदती है।
3.	नकद प्रबंधन बिल (सी.एम.बी.)	सी.एम.बी. की सामान्य प्रकृति टी. बिल की होती है लेकिन ये 91 दिनों से कम परिपक्वता अवधि के लिए जारी किये जाते हैं। सी.एम.बी. की अवधि, अधिसूचित राशि और जारी करने की तारीख सरकार की अस्थायी नकदी की आवश्यकता पर निर्भर है। सी.एम.बी. में निवेश बैंको द्वारा एस.एल.आर. प्रयोजनों हेतु बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 24 के अन्तर्गत सरकारी प्रतिभूतियों में एक योग्य निवेश माना जाता है।
4.	प्रतिस्पर्धी बोली	प्रतिस्पर्धी बोली वह प्रक्रिया है जिसमें एक निवेशक एक विशिष्ट मूल्य/यील्ड पर बोली लगाता है और प्रतिभूतियों को तब आवंटित किया जाता है जब यदि उद्धरित मूल्य/ यील्ड कट ऑफ मूल्य/ यील्ड की सीमा के भीतर हो।
5.	भारत की संचित निधि	वह निधि जिसका गठन भारत के संविधान के अनुच्छेद 266 (1) के अंतर्गत हुआ और जिसमें सभी प्राप्तियाँ, राजस्व और ऋण का संचयन होता है। यह दो भागों में विभाजित है, नामतः राजस्व लेखा (राजस्व प्राप्तियाँ और राजस्व व्यय) और पूँजी लेखा (सार्वजनिक उधार और ऋण इत्यादि)
6.	मुद्रा जोखिम	खरीद के समय और एक मुद्रा की स्थिति/प्रतिभूति की बिक्री के समय के बीच विनियम दरों में एक प्रतिकूल संचरण से नुकसान का जोखिम।
7.	दिनांकित सरकारी प्रतिभूतियाँ	दिनांकित सरकारी प्रतिभूतियाँ दीर्घकालिक प्रतिभूतियाँ हैं और अपने साथ एक निश्चित और प्लोटिंग कूपन (ब्याज दर) रखती हैं, जोकि अंकित मूल्य पर दिया जाता है, जिसका निश्चित समय अंतराल पर भुगतान किया जाता है (सामान्यतः अर्ध वार्षिक)।
8.	ऋण शोधन	ऋणदाता को परिपक्व मूलधन और ब्याज का भुगतान। इसमें आमतौर पर सेवा प्रभार, प्रतिबद्धता प्रभार शामिल हैं।
9.	डिवाल्वमेंट	डिवाल्वमेंट एक प्रक्रिया है जिससे कि यदि निवेश के मामलों का अंशदान कम रहा, तो अन्डर राईटर को शेष प्रतिभूतियों/बॉण्डो पर अंशदान करना आवश्यक है। बचे हुए कुल अंशदान अण्डरराईटर के ऊपर डिवाल्व होते हैं।
10.	एफ.आई.एम.एम.डी.ए.	फिक्स्ड इन्कैम मनी मार्केट और डेरिवेटिव एसोसिएशन ऑफ इण्डिया (एफ.आई.एम.एम.डी.ए.) एक कम्पनी जो कि कंपनी अधिनियम 1956 की धारा 25 के अन्दर समाविष्ट की गयी है और इसमें बाजार के सभी मुख्य संस्थानीय खण्डों का प्रतिनिधित्व करने वाले सदस्य हैं। एफ.आई.एम.एम.डी.ए. विभिन्न सरकारी प्रतिभूतियों की दरों को निस्तारित करती है जोकि बाजार सहभागियों द्वारा मूल्यांकन के प्रयोजनों हेतु प्रयोग की जाती है।
11.	राजकोषीय घाटा	इसका तात्पर्य, एक वित्तीय वर्ष के दौरान, भारत की संचित निधि से, कुल संवितरित कर्ज अदायगी को छोड़कर, निधि में कुल प्राप्तियों के ऊपर (कर्ज प्राप्तियों को छोड़कर) से अधिक संवितरण है।

क्र.सं.	शब्द	विवरण
12.	निर्धारित दर के बंधपत्र	ये वह बंधपत्र है जिन पर बंधपत्र के सम्पूर्ण जीवन काल पर कूपन रेट तय किया जाता है।
13.	फ्लोटिंग दर के बंधपत्र	फ्लोटिंग दर के बंधपत्र वह प्रतिभूतियाँ हैं जिनकी निर्धारित कूपन दर नहीं होती है। कूपन को पूर्व उदघोषित अंतरालों (जैसे हर छः महीने या हर वर्ष) पर आधार दर पर एक समय विस्तार को जोड़कर रीसेट किया जाता है।
14.	सरकारी प्रतिभूति	सरकारी प्रतिभूति एक व्यापार योग्य साधन है जिसे केन्द्र सरकार या राज्य सरकार द्वारा जारी किया जाता है। यह सरकार के ऋण दायित्वों को अभिस्वी करती है।
15.	प्रभावी लागत	किसी भी दिए गए समय पर, एक विशिष्ट पूर्व निर्धारित क्रम में दिए गए स्टोक में लेन देन क्रियावित करने की लागत प्रभावी लागत कहलाती है।
16.	इंडेक्सड बंध पत्र	ये वे बंध पत्र है जिसका मूलधन तथा कूपन मुद्रास्फीती के स्वीकार्य इंडेक्स से जुड़ा हुआ हो जिससे कि धारक की मुद्रास्फीती से रक्षा है।
17.	ब्याज दर जोखिम	ब्याज दरों में प्रतिकूल उतार चढ़ाव के कारण एक ऋण पोर्टफोलियों धारक इकाई द्वारा उठाया गया जोखिम।
18.	बाजार समाशोधन दर	बाजार समाशोधन दर वह दर है जिस पर आपूर्तित मात्रा माँगी गयी मात्रा के बराबर होती है।
19.	बाजार जोखिम	बाजार जोखिम वह अवस्थिति है जो परिसंपत्तियों एवं स्थितियों की बाजार कीमत में संचलन के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ तथा जिसका निर्धारित बाजार में व्यापार किया जा सकता है।
20.	मैच्योरिटी बकेट	मैच्योरिटी बकेट एक प्रतिभूति के अवशिष्ट परिपक्वता की अवधि की दर्शाता है।
21.	परिपक्वता तिथि	तारीख जब मूलधन (अंकित मूल्य) वापस किया जात है।
22.	मौद्रिक नीति	वह प्रक्रिया जिसके द्वारा सरकार या केन्द्रीय बैंक धन का आपूर्ति को प्रभावित करते हुए वृहत अर्थशास्त्र संबंधित स्थितियों पर प्रभाव डालने का प्रयास करते हैं।
23.	एकाधिक/एकसमान मूल्य आधारित नीलामी	एक समान मूल्य की नीलामी में सभी सफल बोलिकर्ताओं को प्रतिभूतियों के आवंटित मात्रा के लिए समान दर, जैसे कि नीलामी कट ऑफ दर पर भूगतान करना आवश्यक होता है, उनके द्वारा लगाये गये दर के बावजूद/इसकी तरफ, एक अनाधिक कीमत नीलामी में सफल बोली कर्ता को प्रतिभूति के आवंटित मात्रा के लिए उसी दर/प्रतिफल पर भुगतान करना आवश्यक होता है जिस पर उन्होंने बोली लगायी हो।
24.	बहुपक्षीय और द्विपक्षीय ऋण	बहुपक्षीय ऋण बहुपक्षीय संस्थानों जैसे कि अंतर्राष्ट्रीय विकास संघ (आई.डी.ए), अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक (आई.बी.आर.डी.), एशियाई विकास बैंक इत्यादि से अनुबंधित किया गया ऋण है। द्विपक्षीय ऋण प्रभुत्तासंपन्न राष्ट्रों से अनुबंधित किया जाता है।
25.	गैर-प्रतिस्पर्धी बोली	गैर-प्रतिस्पर्धी बोली वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा निवेशक विशिष्ट कीमत/यील्ड को उल्लेख किये बिना नीलामी प्रक्रिया में भाग ले सकते हैं। ऐसे बोलीकर्ताओं को नीलामी की भारत औसत मूल्य/ यील्ड पर प्रतिभूतियों का आवंटन किया जाता है।
26.	ओपेन मार्केट संचालन (ओ.एम.ओ.)	ओपेन मार्केट संचालन वे संचालन है जो कि भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा सरकारी प्रतिभूतियों की बाजार में /से बिक्री/ खरीद कर टिकाऊ आधार पर बाजार में रुपये की तरलता की शर्तों के समायोजन के उद्देश्य से संचालित की जाती है।

क्र.सं.	शब्द	विवरण
27.	मूल्य आधारित नीलामी / प्रतिफल आधारित नीलामी	एक मूल्य आधारित नीलामी तब संचालित की जाती है जब जी ओ आई पूर्व में जारी किये गये प्रतिभूतियों को पुनः जारी करती है। बोलीकर्ता प्रतिभूति के फेस वैल्यू के कीमत के संबंध में प्रति 100 ₹ बोली लगाते हैं (उदाहरणतया, ₹ 102.00 ₹ 101.00, ₹ 100.00, ₹ 99.00 इत्यादि प्रति ₹ 100)। बोलियों को अवरोही क्रम में व्यवस्थित किया जाता है तथा सफल बोलीकर्ता वे होते हैं जिन्होंने कट ऑफ मूल्य पर या उससे अधिक बोली लगायी होती है। एक प्रतिफल नीलामी सामान्यतः तब संचालित की जाती है। जब एक नई सरकारी प्रतिभूति जारी की जाती है। निवेशक प्रतिफल संदर्भ में दशमलव के दो स्थानों तक बोलियों लगाते हैं (उदाहरण स्वरूप 8.19 प्रतिशत, 8.20 प्रतिशत इत्यादि)। बोलियों को आरोही क्रम में व्यवस्थित किया जाता है तथा कट ऑफ प्रतिफल नीलामी की अधिसूचित राशि के प्रतिफल के अनुरूप निकाला जाता है। कट ऑफ प्रतिफल को प्रतिभूति के कूपन दर के रूप में लिया जाता है। सफल बोलिकर्ता वे हो जिन्होंने कट ऑफ मूल्य पर अथवा कट आफ मूल्य से कम पर बोली लगायी है।
28.	प्राथमिक डीलर	सरकारी उधारी जरूरतों को जितना सम्भव हो सके, सस्ते और कुशलतापूर्ण ढंग से पूरा करने के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, सरकारी प्रतिभूति बाजार में एक तरफ जारी कर्ता और दूसरी तरफ बाजार के बीच में विशेषज्ञ सहायक की भूमिका को निभाने के लिए योग्यता प्राप्त वित्तीय कम्पनियों / बैंकों के समूह को नियुक्त किया जाता है।
29.	लोक लेखा	संचित निधि में सम्मिलित धन के अलावा सभी प्रकार का धन जोकि भारत सरकार के द्वारा या उसके पक्ष में प्राप्त किया जाता है, उसे भारत के लोक लेखा (भारतीय संविधान का अनु. 266 (2)) में जमा किया जाता है। इसमें भारत की संचित निधि में सम्मिलित ऋण के अलावा ऋण से सम्बंधित लेन-देन सम्मिलित है। लोकलेखा लेन देन संसद द्वारा वोट / विनियोग करने के अधीन नहीं है और शेष राशि को आगे ले जाया जाता है।
30.	लोक ऋण कार्यालय (पी डी ओ)	भारतीय रिजर्व बैंक का लोक ऋण कार्यालय सरकारी प्रतिभूतियों के लिए रजिस्ट्री / डिपॉजिटरी की तरह कार्य करता है और यह ब्याज के भुगतान और परिपक्वता पर मूलधन के पुनर्भुगतान के मुद्दों से संबंधित है।
31.	पुनर्वित्तीयन / रोल ओवर जोखिम	मुक्ति और सरकारी ऋण के नवीनकरण से जुड़े जोखिम
32.	रेपो	रेपो दर का अर्थ है एक साधन जिसके द्वारा प्रतिभूतियों की बिक्री कर निधियों को उधार लिया जाता है, जिसके साथ ही उपरोक्त प्रतिभूतियों को परस्पर सहमत भविष्य की तारीख पर और सहमत मूल्य पर जिसमें उधार लिये गए धन पर ब्याज भी सम्मिलित है पर पुनर्खरीद का समझौता होता है।
33.	रिवर्स रेपो	रिवर्स रेपो का अर्थ है एक साधन जिसके द्वारा प्रतिभूतियों को खरीद कर निधियों को उधार दिया जाता है, जिसके साथ ही उपरोक्त प्रतिभूतियों को परस्पर सहमत भविष्य की तारीख पर और सहमत मूल्य पर जिसमें कि उधार दिये गए धन पर ब्याज भी सम्मिलित है पर पुनः बिक्री का समझौता होता है।
34.	अवशिष्ट परिपक्वता	एक प्रतिभूति की परिपक्वता की तारीख में शेष अवधि को उसकी अवशिष्ट परिपक्वता अवधि कहते हैं। उदाहरण के तौर पर, एक प्रतिभूति जो 10 साल की मूल अवधि के लिए जारी की जाती है, उसकी 2 वर्ष के पश्चात् अवशिष्ट परिपक्वता 8 वर्ष की होगी।

क्र.सं.	शब्द	विवरण
35.	द्वितीयक बाजार	बाजार जिसमें बकाया प्रतिभूतियों का व्यापार होता है। यह बाजार प्राथमिक या प्रारंभिक बाजार से अलग है जहाँ प्रतिभूतियों को पहली बार बेचा जाता है। द्वितीयक बाजार खरीदने और बेचने को संदर्भित करता है जोकि प्रतिभूति की प्रारंभिक सार्वजनिक बिक्री के बाद भी चलता रहता है।
36.	विशेष प्रतिभूतियाँ	भारत सरकार द्वारा तेल विपणन कम्पनियों, उर्वरक कंपनियों, भारतीय खाद्य निगम जैसी इकाईयों को नकद राजसहायता के बदले में इन कंपनियों को क्षतिपूर्ति के रूप में विशेष प्रतिभूतियाँ जारी की जाती हैं, जिनकी तुलनीय परिपक्वता की दिनांकित प्रतिभूतियों के यील्ड के उपर 20-25 आधार अंको का विस्तार है।
37.	तनाव परीक्षण	जोखिम विश्लेषण की विधि जिसमें अनुरूपणों का उपयोग सबसे खराब स्थितियों में प्रभाव का अनुमान लगाने के लिए किया जाता है।
38.	लक्षित शेष	वह न्यूनतम शेष जिसे एक दी गई तिथि पर केन्द्रीय बैंक के साथ सरकारी खाते में रखा जाना चाहिए।
39.	ट्रेजरी बिल (टी बिल)	ट्रेजरी बिल या टी बिल भारत सरकार द्वारा जारी लघु अवधि के ऋण उपकरण है और वर्तमान में ये तीन अवधियों के लिए जारी किये जाते हैं नामतः 91 दिन, 182 दिन और 364 दिन। ट्रेजरी बिल शून्य कूपन प्रतिभूतियाँ है और इन पर कोई ब्याज नहीं मिलता।
40.	ट्रेजरी एकल खाता (टी एस ए)	एक टी एस ए (खजाना एकल खाता) सरकार के बैंक खातों की एक एकीकृत संरचना है जो सरकार के नकद स्रोतों का एक समेकित दृश्य दिखाता है। नकद की एकता और खजाने की एकता के सिद्धांत पर आधारित, एक टी एस ए एक बैंक खाता है या संबद्ध खातों का एक समूह है जिसके द्वारा सरकार अपनी सभी प्राप्तियों और भुगतानों को क्रियान्वित करती है। एकता का सिद्धांत सभी नकदियों के लिए इनके अन्तिम उपयोग के निरपेक्ष प्रतिमोच्यता का पालन करता है।
41.	अंडरराइटिंग	वह व्यवस्था जिसके द्वारा निवेश बैंकर प्राथमिक रूप से जारी करने वाली प्रतिभूति के किसी अंशदानरहित हिस्से के अधिग्रहण करने का दायित्व लेता है।
42.	अर्थोपाय अग्रिम (डब्ल्यू एम ए)	केन्द्रीय बैंक द्वारा सरकार को दिये गये अग्रिम। यदि सरकारी व्यय उधारों से प्राप्त कराधान प्लस प्राप्तियों से आगे होते हैं तब उन्हें देना आवश्यक होता है।
43.	भारित औसत मूल्य/यील्ड	यह मूल्य/ यील्ड का भारित औसत मीन है, जहाँ भार वह मात्रा है जो मूल्य/यील्ड पर उपयोग की जाती है।
44.	यील्ड	एक प्रतिभूति पर अर्जित वार्षिक प्रतिशत वापसी की वार्षिक दर। यील्ड प्रतिभूति की क्रय कीमत और कूपन ब्याज दर का एक फलन है।